This question paper contains 7 printed pages]

HPAS (Main)—2013

HINDI LITERATURE

Paper II

Time : 3 Hours *Maximum Marks :* 150

Note :— कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न क्र. 1 अनिवार्य है। **सभी** प्रश्नों के अंक समान हैं।

1. निम्नलिखित अवतरणों की व्याख्या कीजिए :

(क) मेरे जाति-पाँति न चहौं काहूकी जाति-पाँति,

मेरे कोऊ कामको न हौं काहूके कामको।

लोकु परलोकु रघुनाथ ही के हाथ सब,

भारी है भरोसो तुलसी के एक नामको॥

अति ही अयाने उपखानो नहि बुझैं लोग,

'साह ही को गोतु-गोतु होत है गुलामको॥'

अथवा

(i) माया दीपक नर पतँग, भ्रमि-भ्रमि इवै पड़ंत।
कहै कबीर गुर ग्यान थैं, एक आध उबंरत॥

(ii) सतगुर साँचा सूरिवाँ, तातैं लोहि लुहार।
कसणी दे कंचन किया, ताइ लिया ततसार॥

(ख) हे पुरुष-सिंह, तुम भी यह शक्ति करो धारण,
आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर,
तुम वरो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर,
रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त्र,
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त,
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन॥

अथवा

वर्षा ऋतु की स्निग्ध भूमिका
प्रथम दिवस आषाढ़ मास का
देख गगन में श्याम घन घटा
विधुर यक्ष का मन जब उचटा
खड़े-खड़े तब हाथ जोड़कर
चित्रकूट के सुभग शिखर पर
उस बेचारे ने भेजा था
जिनके ही द्वारा संदेशा
उन पुष्करावर्त मेघों का
साथी बनकर उड़ने वाले
कालिदास, सच-सच बतलाना
परपीड़ा से पूर-पूर हो

थक-थक कर औ' चूर-चूर हो

अमल-धवल गिरि के शिखरों पर

प्रियवर, तुम कब तक सोये थे ?

रोया यक्ष कि तुम रोये थे ?

कालिदास, सच-सच बतलाना।

(ग) होरी प्रसन्न था। जीवन के सारे संकट सारी निराशाएँ मानो उसके चरणों पर लोट रही थीं। कौन कहता है, जीवन-संग्राम में वह हारा है। यह उल्लास, यह गर्व, यह पुलक क्या हार के लक्षण हैं ? इन्हीं हारों में उसकी विजय है। उसके टूटे-फूटे अस्त्र उसकी विजय पताकाएँ हैं। उसकी छाती फूल उठी है, मुख पर तेज आ गया है। हीरा की कृतज्ञता में उसके जीवन की सारी सफलता मूर्तिमान हो गई है। उसके बखार में सौ-दो-सौ मन अनाज भरा होता, उसकी हाँड़ी में हजार-पाँच सौ गड़े होते, पर उससे यह स्वर्ग का सुख मिल सकता था ?

अथवा

भूमा का सुख और उसकी महत्ता का जिसको आभास-मात्र हो जाता है, उसको ये नश्वर चमकीले प्रदर्शन नहीं अभिभूत कर सकते, दूत! वह किसी बलवान की इच्छा का क्रीड़ा-कन्दुक नहीं बन सकता। तुम्हारा राजा अभी झेलम भी नहीं पार कर सका, फिर भी जगद्विजेता की उपाधि लेकर जगत को वञ्जित करता है। मैं लोभ से, सम्मान से या भय से किसी के पास नहीं जा सकता।

अथवा

बदली और शीत, किन्तु दिन के प्राण सुंदर हैं—सुंदर और स्निग्ध, सद्यः स्नात···वह संगीतकार होता, तो आज के दिन की आत्मा को स्वरों की तूलिका से आँक लेता—चित्रकार होता तो उसका चित्र खींचता, मूर्तिकार होता तो स्फटिक

शिला में उसके प्राण को बाँधकर ऊपर कर देता—अमर नहीं, अमर तो वह स्वयं है, उसके आकार को मूर्त की परिधि में ले आता·····क्योंकि आनंद का भी आकार अवश्य होता है, जो बोध की उँगलियों से छुआ जा सकता है—अगर वह आकार मूर्त नहीं है, तो यह केवल शिल्पकार को रूप-सज्जा की स्वच्छन्दता देता है। 3×10=30

2. अन्य भक्त कवियों की तुलना में कबीर आधुनिक प्रतीत होते हैं, सोदाहरण समझाइये।

3. 'भ्रमरगीत' के आधार पर सूरदास की काव्य-कला का परिचय दीजिए।

4. तुलसीदास जितने आदर्शवादी हैं उतने की यथार्थवादी भी—इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

5. भारतेंदु हरिश्चंद्र का नाटक 'अँधेर नगरी' औपनिवेशिक शासक का एक राष्ट्रीय रूपक है—उक्त कथन की समीक्षा कीजिए।

6. 'सरोज-स्मृति' जीवन के दु:ख की कथा ही नहीं है, वह दु:ख के विरुद्ध निराला के संघर्ष की कथा भी है—उक्त कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

7. 'गोदान' उपन्यास और 'मानसरोवर-भाग एक' में संकलित कहानियों के आधार पर प्रेमचंद की दलित-समाज संबंधी समझ का परिचय दीजिए।

8. मुक्तिबोध की कविता 'अँधेरे में' के काव्य-शिल्प पर विचार कीजिए।

9. धूमिल यथार्थवादी कवि हैं, 'पटकथा' कविता के आधार पर उक्त कथन का सोदाहरण विश्लेषण कीजिए।

10. 'शेखर : एक जीवनी' की मूल समस्या पर विचार कीजिए।

4×30=120